Vol.4, No 3, July-Sep, 2018

भार[illegible] दर्शन एवं वैदिक साहित्य में पर्यावरण–चेतना

किशोर कुमार

एसो[illegible]ट प्रोफेसर–इतिहास,कु.मा.रा.म.स्ना.महा. बादलपुर, गौतमबुद्ध नगर

Email: dr.kumarkishor@gmail.com

Abstract. 21वीं स[illegible] लगभग दो दशक गुजर चुके हैं। मानव ने विज्ञान को आधार मानकर अथाह प्रगति की है, जिसके चलते म[illegible] जीवन को एक उत्कृष्ट आयाम मिला है। लेकिन क्या ये कथन सत्यता के समीप है? [illegible] अर्थ में तो हर[illegible] नहीं। पर्यावरण संरक्षण की समस्या इसी दौर का सबसे ज्वलंत मुद्दा है जो मुख्यतः मानव [illegible]र्मित है। वर्तमान [illegible] में मनुष्य प्रगति की ओर उन्मुख तो हुआ लेकिन साथ–ही–साथ पर्यावरण इस विकास से प्रभावित होकर प्रदू[illegible]ता चला गया। विकसित देश जिस आर्थिक विकास का लाभ आज उठा रहा है वह भूतकाल में मानवीय [illegible]रण के संरक्षण को ध्यान में रखे बिना प्राप्त किया गया था।[1] प्रकृति के अत्यधिक दोहन के कारण आज जो [illegible]याँ पैदा हुई हैं उसमें प्रकृति कब तक मनुष्य का साथ दे पाएगी यह अनुमान लगाना कठिन नहीं है। भार[illegible] विकासशील देशों जहाँ कृषि एवम्, अन्य संसाधनों का उपयोग आजीविका और आर्थिक [illegible]ति के लिए आध[illegible]ाथमिक स्रोत के रूप में किया जाता है, में चुनौतियाँ विशेषकर ज्यादा गंभीर हैं। भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, [illegible]न आदि भौगोलिक आपदाओं की तुलना में जलवायु परिवर्तन से संबंधित आपदाओं का [illegible] अभि[illegible]या गया है।

[illegible]लिए यह तथ्य [illegible] प्रमुख हो जाता है कि भारत का दृष्टिकोण पर्यावरण के मुद्दे पर कैसा रहा है। भारतीय दर्शन [illegible] प्राचीन [illegible]ओं में पर्यावरण संरक्षण को क्या महत्त्व दिया गया है।

[illegible] इस शोध पत्र [illegible]ाध्यम से पर्यावरण पर भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण की चर्चा के साथ–साथ वैदिक साहित्यिक परम्परा [illegible]रण के विभिन्न आयामों से भी अवगत कराया जाएगा। जिसमें पता चल सकेगा कि [illegible] ने पर्या[illegible] अक्षुण्ण बनाये रखने में किस प्रकार से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का परिचय दिया।

[illegible] दर्शन में पर्या[illegible] प्रति दृष्टिकोण

[illegible] से पर्याव[illegible] प्रति चिन्ता भारतीय बौद्धिक तथा प्रचलित परम्पराओं का अभिन्न हिस्सा रही [illegible] दर्शन [illegible] में षड् दर्शन, सांख्य योग, मीमांसा, न्याय, वैशेषिक एवम् वेदान्त है जिन्हें [illegible] दर्शन [illegible] जाता है और अन्य दर्शनों में प्रमुख रूप से नास्तिक दर्शन बौद्ध एवम् जैन [illegible] जिनमें पर्याव[illegible] अवधारणा को मजबूती से स्वीकार किया गया है। सांख्य दर्शन में पर्यावरणीय [illegible] को [illegible] तार्किक ढंग से उठाया गया है। सांख्य दर्शन एक द्वैतवादी विचारधारा है जो [illegible] में दो [illegible] स्वतंत्र तत्वों की सत्ता स्वीकार करता है। इनमें से एक जड़ प्रकृति है और [illegible] है। [illegible] दर्शन में प्रकृति भोग तथा कैवल्य दोनों का कारक है एवम् इस स्वरूप में [illegible] तो ईश्वराश्रित है न ही मिथ्या। पुरुष की भाँति प्रकृति भी सत् है। पुरुष का [illegible] है, प्रकृति पूज्य है। सांख्य की ज्ञानमीमांसा भी प्रकारान्तर से पर्यावरण दर्शन [illegible]

दृष्टमनुमानमाप्तवचनम् च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात।
त्रिविधं प्रमाणसिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि।।[2]

प्रत्यक्ष, अनुमान एमव् आप्तवचन ये तीन प्रकार प्रमाणों के माने गए हैं। यद्यपि पर्यावरण दर्शन की दृ प्रत्यक्ष एवम् अनुमान भी महत्वपूर्ण है क्योंकि पर्यावरण की हानि या लाभ इन्हीं के आधार से ज्ञात है तथापि आप्त वचनों का ज्यादा महत्व है क्योंकि वेदों–स्मृतियों, पुराणों एवम् अन्य धर्मशास्त्रें आदि के से उत्पन्न ज्ञानों का समावेश इसी के अन्तर्गत होता है एवम् इनमें पर्यावरण विषयक अनेक वचन निर्देश भरे पड़े हैं जिनके अनुपालन से पर्यावरण संतुलन बना रहता है।

कृष्ण कृत सांख्यकारिका में प्रकृति की स्वतन्त्र सत्ता को सिद्ध करने के लिए निम्न युँक्ति का प्रयोग गया–

"भेदानां परिमाणात् समन्वयात् शक्तिः प्रवृत्तेश्च।
कारणकार्य विभागादविभागाद् वैश्यरुप्यस्य।।"[3]

निहितार्थ है कि संसार के समस्त विषय सीमित, परतंत्र, अनित्य तथा सापेक्ष हैं। अतः संसार के सभी का मूलकारण अवश्य ही असीमित, स्वतंत्र नित्य एवम् एक होगा। यह कारण प्रकृति है।

सांख्य दर्शन पर्यावरण को अक्षुण्ण बनाये रखने में अपने दार्शनिक महत्त्व को बताने में सफल हो जाता भारतीय दार्शनिक परम्परा में सांख्य और योग को समान तंत्र (Allied System) की संज्ञा दी गई हैं कई महत्वपूर्ण पक्षों पर इनमें परस्पर संहमति है। इनमें परस्पर पूरकता का भाव विद्यमान हैं। योग संसार पर्यावरण क्षरण का मुख्य कारण आसक्ति तथा भोग की प्रवृत्ति है। इस प्रवृत्ति का नाश ही योग से वैराग्य स्वतः उत्पन्न होता है। आसक्तिहीनता वस्तुतः पर्यावरण पोषण की ता है।

न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाणों द्वारा किसी अर्थ की परीक्षा को न्याय कहते है। यथार्थ अनुभव ही प्रमा हैं जहाँ जो वस्तु जिस रूप में है, उसका उसी रूप में ज्ञान होना यथार्थ अनुभव है। को प्रवृत्ति सामर्थ्य कहते हैं परन्तु प्राणिमात्र की यह प्रवृत्ति–सामर्थ्य प्रकृति क्योंकि असंतुलित प्रकृति की अभिव्यक्ति विविध प्रकार के प्रलयकारी रूपों में होती गौतम के अर्थ निरूपण की दृष्टि से पर्यावरण दर्शन का समुचित विश्लेषण किया जा सकता है। का बोध कराता न्याय दर्शन का एक विशिष्ट आयाम है। पर्यावरण पोषण ईश्वरीय है। प्राकृतिक उपादानों एवम् उनके सामंजस्य को नष्ट करना ईश्वरीय व्यवस्था में प्रतिरोध है।

कणाद वैशेषिक दर्शन में प्रधानतः प्रमेय का ही निरूपण किया गया है। न्याय के समान वैशेषिक भी यह मानता है कि ज्ञान स्वभावतः अपने से भिन्न किसी अन्य वस्तु को विषय बनाता है से स्वतन्त्र होती है। वैशेषिक दर्शन बौद्धों के समान बाह्य सत्ता को केवल विज्ञान अपितु उनकी स्वतंत्र एवम् वास्तविक सत्ता का प्रतिपादन करता है। चूँकि वैशेषिक को एक से अधिक मानते हैं तथा ज्ञाता से पृथक उनकी स्वतंत्र सत्ता को स्वीकार वैशेषिक दर्शन बहुतत्ववादी वस्तुवाद का समर्थन करता है। वैशेषिक दर्शन का यही पर्यावरणीय चेतना का आधार बन जाता है।[5] दर्शन का मुख्य प्रतिपाद्य जगत तथा भिन्न तत्त्व हैं, जो पर्यावरणीय चिंतन की दृष्टि से नितान्त महत्वपूर्ण है। यहाँ

दर्शन का लक्ष्य नहीं है। यहाँ पदार्थ ज्ञान ही मोक्षदायक है। पदार्थों का संतुलन है।

तः पर्यावरणगामी है। वेद–निर्दिष्ट विधि तथा निषेध के अनुसार क्रिया में प्रवृत्ति ोना ही धर्म का लक्षण है। पर्यावरण के विषय में वेदों के जो वाक्य हैं वे सभी हैं और जिनका अनुपालन अपरिहार्य है।

मिथ्यात्व का सही अर्थ न समझने के कारण प्रायः लोगों में यह भ्रांति उत्पन्न हो तुतः असत् है अतएव उसके संतुलन एवम् संपोषण का प्रश्न ही नहीं उठता, किन्तु में जगत का निराकरण नहीं किया गया है, अपितु उसकी व्याख्या की गई है। का अधिष्ठान ब्रह्म अथवा आत्मा ही है। सत् एवम् असत् से विलक्षण होने के गया है। मिथ्या एवम् असत् अद्वैत दर्शन में पर्यायवाची अथवा समानार्थक नहीं है। पर्यावरणीय चेतना की व्याख्या एवम् विवेचन अत्यन्त सार्थक ढंग से किया गया है। जीवन का आधार स्तम्भ है वही ब्रह्म चेतना, पर्यावरण चेतना है।

तुलन की गहन चेतना जैन दर्शन में भी विद्यमान है जो उसके तत्वमीमांसा तथा समर्थित एवम् पोषित हैं। जैन दर्शन का जीव तत्व सारे जगत् में समाया हुआ है। त् जीव का लक्षण चेतना है। इस तरह संसार के छोटे से छोटे जीवन में चेतना प्रत्येक जीव में चेतना की बात कहकर जैन दर्शन जैव–विविधता के दृष्टिकोण को ता है।

वम् विकास भी पर्यावरण चिंतन से सर्वथा अनुप्राणित है। बुद्ध ने साधारण ज्ञान से राज प्रासाद में नहीं अपितु प्रकृतिक एवम् पर्यावरण की गोद में भ्रमणशील तथा था। बौद्ध दर्शन के अनुसार विश्व की सभी वस्तुएँ, सभी मनुष्य सभी घटनाएँ र हैं। उनका यह परस्पर निर्भर होना पर्यावरण संरक्षण एवम् पोषण का मूलमंत्र है। व पर्यावरण संरक्षण की आधारशिला है। बौद्ध दर्शन का पर्यावरण चेतना–विषयक के गहन परिस्थितिकी के सिद्धान्त से श्रेयस्कर है।[7]

विभिन्न दार्शनिक पद्धतियों में प्रकृति को लेकर हमारी पर्यावरणीय चेतना को सम्यक है। इस प्रकार मुख्यतः सभी भारतीय दर्शनों में पर्यावरण की सार्थकता को निर्विवाद

ण–चेतना

है। यह उन सम्पूर्ण शक्तियों, परिस्थितियों एवम् वस्तु का योग है जो मानव उनके क्रियाकलापों को अनुशासित करती है। वैदिक साहित्य की बात करें तो ी पक्ष इसमें अछूता नहीं रहा जिसमें इन पक्षों के दर्शन न हो। भारतीय संस्कृति में ा गया है पमाता भूमिः पुत्रे[हं पृथिव्यार[7] अर्थात् पृथ्वी हमारी माँ है और हम पृथ्वी माता रूप में सम्पूर्ण ब्रह्मांड के जीवों का पालन पोषण करती है। अतः इसका संतुलित है।

ने अंतरिक्ष से लेकर व्यक्ति तक, समस्त परिवेश के लिए शांति की प्रार्थना की है। क्योंः यजुर्वेद की यह पंक्ति एक व्यापक पर्यावरण की अवधारणा को परिभाषित करती है और रिक्ष में फैले कचरे के निवारण के लिए एक सार्थक संदेश देती है। वैदिक ऋषियों ने तत्वों को देव कहकर उनके महत्व को प्रतिपादित तो किया ही साथ ही मनुष्य के रणीय महत्व को भी भलीभाँति स्वीकार किया है। पर्यावरण को संतुलित रखने के लिए हत्वपूर्ण भूमिका है उनमें सूर्य, वायु, वरूण (जल) एवम् अग्नि आदि देवताओं से रक्षा की ऋग्वेद एवम् अथर्वेद में दिव्य, पार्थिव और जलीय देवों से कल्याण की कामना की गई

कृतिक पदार्थों से कल्याण की कामना को स्वस्ति कहा गया है इस पर आचार्य सायण न है कि अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति योग है एवम् प्राप्त का संरक्षण क्षेम है (ऋग्वेद, पर्यावरण को सुरक्षित रखने की उदात्त भावनाएँ हमें अनेक जगहों पर देखने को

ों वृक्षों के महान योगदान एवम् भूमिका को स्वीकार करते हुए मुनियों ने वृहत् चिंतन में उनके महत्व को स्वीकार करते हुए कहा गया है कि दस कुओं के बराबर एक वडियों के बराबर एक तालाब, दसं तालाबों के बराबर एक पुत्र और दस पुत्रें के है।

> दश कूप समा वापी, दशवापी समोहद्रः।
> दशहद समः पुत्रे, दश पुत्रे समो द्रुमः।।[9]

ा करने के साथ–साथ अधिकाधिक वृक्षों का रोपण भी करना चाहिए।

धार शिला है। ऋग्वेद में वायु को विश्व भेषज अर्थात् सबका चिकित्सक कहा गया गई है कि सर्वत्र शुद्ध वायु प्रवाहित हो

> आ बात वाहि भेषजं वि बात वाहि यद्रपः।
> त्वं हि विश्वभेषजो देवानां दूत ईयसे।।[10]

ने के लिए वैदिक काल में यज्ञ विधि को अपनाया गया था। वायु को शुद्ध एवं जो अणु–भेदन शक्ति यज्ञाग्नि में है वह अन्यत्र नहीं।[11] यज्ञ को वेदों में आकाश करने वाला बताया गया है तथा यज्ञ कर्म में प्रवृत होने की प्रेरणा दी गयी है।

उक्ति से हम सभी सुपरिचित हैं। वेदों में भी जल को जीवनाधार मानते हुए उन्हें ी गई है–

या आपो दिव्या उत वा स्रवन्ति

खनित्रिमा उत वा या स्वयंजा।।[12]

शुद्ध जल वर्षा से मिलते हैं, जो खोदने से उत्पन्न होते हैं, या जो स्वतः उद्भूत होते एकत्र करना चाहिए।

के जल को संग्रहीत करने के निर्देश दिए गये हैं तथा जल को नष्ट न करने का

"मा आपो हिंसी"[13]

धार एवं आश्रय स्थल पृथ्वी ही है। अतः वेदों में भूमि को माता के समान वन्दनीय यों को उत्पन्न करने वाली, वनस्पतियों व शस्य सम्पदा को धारण करने वाली, । अतः उसे सर्वविध संरक्षित करना चाहिए।

थ्वी के जिस भाग को खोदा गया हो उसे तुरन्त भर देना चाहिए। पृथ्वी के हृदय त पहुँचाओ–

यत् ते भूमि विखनामि क्षिप्रं तदपि रोहतु।
मा ते मर्म विमृग्वरि मा ते हृदयमर्पिपम्।।[14]

की उपयोगिता को स्वीकारते हुए यजुर्वेद में पृथ्वी का अनावश्यक दोहन न करने

पृथिवी द्यंह पृथिवि मा हिंसी।[15]

ूषण और उसके प्रभाव

ज अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सबसे बड़ी समस्या बनकर आया है। इसकी अवधारणा तु यह तो प्रकृति के प्रारम्भ से ही विद्यमान रहा है। महर्षि यास्क ने अपने छह विकार गिनाए हैं, उनमें पर्यावरण के संदर्भ में अस्ति या सत्ता शब्द चिंतनीय ते हैं कि कोई वस्तु तभी अपनी सत्ता को बनाए रख सकती है, जब वह स्वयं ो। जब उसमें बाहरी हस्तक्षेप अधिक होता है तो उसकी आत्मधारणा शक्ति नष्ट दूषण है। इसी प्रकार विष शब्द का प्रयोग शारीरिक एवम् प्रदूषण के रूप में ाम मण्डल के 101 सूक्त के मंत्रें में विष शब्द का प्रयोग अनेक बार प्रयुक्त हुआ

आशंका से युक्त होकर उसके निवारण के लिए इस सूक्त का प्रयोग किया है। ण के पर्याय स्वरूप में अथर्ववेद में आया है।[16] यजुर्वेद के कई मंत्रें में–अग्नि, त, स्वप्न में अथवा जागते हुए पाप एवम् प्रदूषण से छूटने की कामना की गई

लिए ऋग्वेद में विभिन्न पदार्थों से विष आदि हरण की कामना की गई है।[18] आचार्य विनियोग' लिखकर ही इस सूक्त का भाष्य लिखा है। ऋग्वेद में चेतावनी दी गई है। र्यों अथवा वचनों को अपनी क्रियाओं को दूषित करते हैं, वे राक्षस दुःख सागर में गोते अथर्ववेद में सभी प्रकार के प्रदूषण मुक्ति की कामना की गई है। हे मनुष्य! जो खेती है और जो दूध व जल पीता है, चाहे वह नया हो या पुराना, वह सब अन्नादि तेरे

ण के प्रभाव से होने वाली हानि के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है। प्रदूषण के बढ़ जाने से सूर्यादि ग्रह क्रूर हो जाते हैं और सूर्य की किरणें उग्र होकर स्थावर, पति आदि तीनों लोकों को जलाने लगती है।[21] इस प्रकार यहाँ पर ग्लोबल वार्मिंग देखने को मिलता है। ब्रह्मपुराण में प्रकृति प्रलय की संभावनाओं को प्रदर्शित करते र्यावरण की रक्षा के लिए विश्व को सचेत करने का उपदेश दिया है और भौतिक का उपाय बताते हुए, इनके स्थान को इस प्रकार परिगणित किया है– (1) पृथ्वी (3) तेजो मंडल, (4) वायु मंडल और (5) आकाश मंडल।[22]

दो मत नहीं है कि वैदिक साहित्य ने पर्यावरण से जुड़े प्रत्येक पहलू पर बहुत ही ला है। उपरोक्त तथ्यों से यह बात पूर्णतः पुष्ट हो जाती है कि हमारे मनीषियों ने कैसे पर्यावरण का पाठ पढ़ाया और इसके प्रति संवेदनशील रहने के लिए प्रेरित

ति के प्रत्येक पक्ष ने पर्यावरण को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया। लेकिन ल एवम् पाश्चात्य पूंजीवादी दृष्टिकोण ने हमारे मौलिक स्वरूप को कई परतों से भी पूँजीवाद की तरफ बढ़ते हुए प्रकृति को निठुर मानकर उसे नियंत्रित करने का ने अन्य देशों की तुलना में पर्यावरण पर होने वाले अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का अपनी सजगता का प्रमाण दिया है। यह बात सर्वथा सत्य है कि प्रकृति के दोहन है किंतु उतना ही दोहन किया जाना चाहिए जितने की आवश्यकता हो। उससे संतुलन की समस्या उत्पन्न कर सकता है इसलिए आज विकास पर नहीं, अपितु ता पर बल दिया जाना चाहिए। वर्तमान समय में मानव द्वारा पर्यावरण के साथ और सामंजस्यपूर्ण संबंध को अपनाया जाना चाहिए। अतः भारत अपनी प्राचीन होकर पर्यावरण जैसे जटिल मुद्दे पर पूरे विश्व का मार्गदर्शक बन सकता है।

, पडेवलपिंग कंट्रीज पर्सेप्शन्स ऑफ इनवायरमेंटल प्रोटेक्शन एंड इकॉनामिक –आई–एल– वाल्यूम 24 (1984), पृ– 489–

Samkhya Karika Compiled and Indexed by Ference Ruzsa ¼2015½, Sanskrit ves, Samkhya Karika by Iswara Krisna.

lal "Perception An Essay on Clssaical Indian Theories fo Knowledge"k~ rsity Press, 1986), p.k~ xiv.

endranath, "A History fo Indian Philosphy ¼1975½, Vol.k~ 1, Ed.k~ Motilal lhi, ISBN 978&81&208&0412&8.

C.k~ "Buddhist Philosophy and the Ideals fo Environmentalism, Ph.D.k~ Thesis, epartment o Philosophy, DURHAM University.

/17

1, 7/35/11) एवम् अर्थवेद (10/9/12)

512)

/3

कृत साहित्य में पर्यावरण शिक्षा, मुहिम प्रकाशन दिल्ली, 2016, पृ– 16–

–, वैदिक संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण, पैराडाइज पब्लिशर्स, जयपुर, 2011, पृ—115

35

10

₹ 16

₹ 50–

/11 तथा वायुपुराण, 7/41–42–

गीताप्रेस, गोरखपुर।